ISSN: 2454-5503

CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

A Peer Reviewed Bimonthly International Journal

VOL. 4 NO. 6 SPECIAL ISSUE DECEMBER 2018 IMPACT FACTOR:4.197(IIJIF)

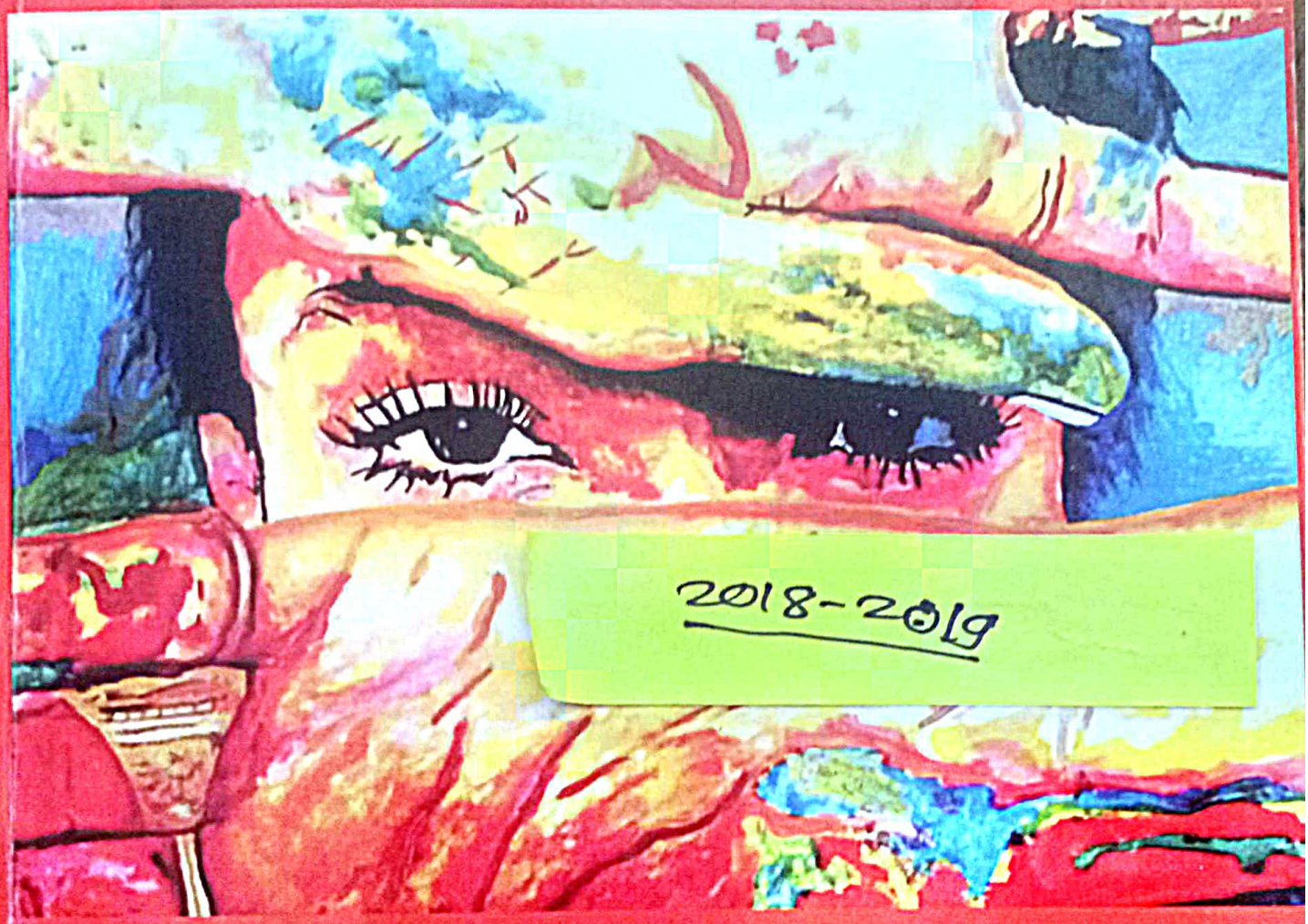

2018-2019

Special Issue On

PROBLEMS AND CHALLENGES BEFORE THE WORKING WOMEN

Guest Editor
Dr. Vasant Satpute

Associate Editor
Dr. Sunita Tengse
Assistant Editor
Dr. M. B. Patil

IMPACT FACTOR:4.197(IIJIF) ISSN: 2454-5503

CHRONICLE

OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES (CHCS)

VOL. 4 NO. 6 SPECIAL ISSUE DECEMBER 2018

A Peer Reviewed Bimonthly International Journal

Special Issue On

PROBLEMS AND CHALLENGES BEFORE THE WORKING WOMEN

Guest Editor

Dr. Vasant Satpute

Associate Editor

Dr. Sunita Tengse

Assistant Editor

Dr. M. B. Patil

Mahatma Gandhi Education and Welfare Society's

CENTRE FOR HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES, KALYAN (W)

www.mgsociety.in +91 8329000732 Email: chcskalyan@gmail.com

19. कामाच्या ठिकाणी होणाऱ्या महिलांचा लैंगिक छळ व
राजश्री पांचाळ 93
20. प्रसुतीपुर्व लिंगनिदन प्रतिबंधक कायदा 1994 |
डॉ. भारत भो. राठोड 97
21. नांदेड जिल्ह्यातील लिंग गुणोत्तराचा अभ्यास |
शंकर सटवाराव जाधव 100
22. ग्रामीण भागात नौकरी करणाऱ्या महिलांच्या समस्या |
ए. बी. वाळके 107
23. नौकरी करणाऱ्या महिलांच्या कौटुंबिक समस्या : एक अभ्यास |
माने उषा यशवंतराव 112
24. कामकाजी महिला व पुरूषसत्ताक मानसिकता |
डॉ. मोहन मिसाळ 117
25. महिलाओं की पारिवारिक समस्याएँ और मनोविज्ञान |
डॉ. पांडुरंग दुकळे 120
26. हिन्दी कथा साहित्य में चित्रित कामकाजी नारी |
डॉ. कुलकर्णी वनिता बाबुराव 124
27. कामकाजी नारी समस्या- सुझाव |
डॉ.शारदा राऊत, अर्चना बदने 123
28. स्त्री चेतना और मानवाधिकार | डॉ. वडचकर एस.ए. 138
29. Legal Rights and Protection of Working Women 142
Dr. Ambadas Pandurang Barve
30. Dilemma of a Working Mother 147
Harsha Rana
31. Cyber Crime and the Working Women: A Critical Overview 153
Dr. Vasant D. Satpute
32. Problems Faced by Women in Workplace.... 157
Varma Vishal Parashram & Varma Priya Parashram
33. Mee Too Movement and Working 161
Dr. Ahilya Bharatrao Barure

Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

28

स्त्री चेतना और मानवाधिकार

डॉ. वडचकर एस.ए.
हिन्दी विभाग
कै. रमेश वरपुडकर महा. सोनपेठ, जि. परभणी

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

अबला नहीं कहा जा सकता, अब विश्व की नारी की,
राख समझना भूल बहुत है, छिपी हुई चिनगारी को //

एक युग था भारतीय नारी का सारा जीवन घर की चारदीवारी के भीतर बीतता था | वह अपना पुरा समय और शक्ति चुल्हे चौके का काम करने, वर्तन मांझ ने, संतान का लालन-पालन करने में और गृहस्थी की देखभाल में विताती थी | उसे गृह-लक्ष्मी, गृहणी कहकर उसके प्रति सम्मान भी प्रकट किया जाता था मध्यकाल के सामन्ती वातावरण में वह पुरूष की भोग्या, दासी मात्र बन कर रह गई | उसे पाँव की जुती समझकर उसके साथ दुर्व्यवहार किया जाने लगा | परंतु आज बात कुछ बदल गयी है वह विद्यालयों और महाविद्यालयों में पढने लगी, उच्च उपाधियाँ प्राप्त करने लगी, उसमें आत्मसम्मान, स्वावलंबन की भावना जगी, अपनी प्रतिभा का उपयोग करने की लालसा उत्पन्न हुई तो चारदीवारी की लक्ष्मण रेखा का उल्लंघन कर नौकरी करने के लिए निकल पड़ी |

नारी यह मूल विषय ही ऐसा है जो एक सार्वभौम और सार्वकालिक सामाजिक समस्या से सम्बध्द है | नारी समस्या समाज की वह जीवन्त समस्या है, जो परिवार-परिवेश, ग्राम-नगर सर्वत्र उपस्थित है | यह ऐसा जीवन्त ज्वलन्त प्रश्न है, जो प्रत्येक विचारशील व्यक्ति को चिंतन करने के लिए विवश करता है | एक और उसे सृष्टी की सुन्दरतम वस्तु भी माना जाता है | उसका रूप ही उसकी श्रेष्ठता को सिध्द करने में पूर्ण समर्थ है फिर उसका आत्मगौरव, अकुष्टसेवा, त्याग कृती ही उसे महिमामयी बनाती है | उसकी मोहन छवि ने पुरूष चित्त को सदैव लुभाया है और उसकी सेवा त्याग वृत्ति ने अभिभूत किया है | भारतीय वाङ्मय में नारी - महिमा का गान हुआ ही है, भौतिकवादी सभ्यता का साहित्यकार भी उसके संग को प्रिय मानता है | गेटे का कथन है- "Society of women is foundation of good manners" लावेल की चिन्तनधारा गेटे से भी आगे है वे लिखते है - Earth's noblest thing is a women perfact."

देश को आजादी मिलने के पश्चात भारतीय संविधान ने महिलाओं के प्रति संवेदना दिखाते हुए, उन्हे पुरूषों के समान अधिकार प्रदान किये और आजाद देश

Dist. Parbhani
Lal... Varpudkar (ACS) College, Sonpeth

की सरकारों ने महिलाओं के हितों में समय - समय पर अनेक कानून बनाये, शिक्षा के प्रचार प्रसार को महत्त्व दिया गया और बच्चियों को पढ़ने के लिए प्रेरित किया गया इस प्रकार से जनजागरण के जरिये महिलाओं ने अपने हक को पाने के लिए पुरूषोंद्वारा किये जा रहे अन्याय के विरूध्द अनेक आन्दोलनों के माध्यम से अपनी आवाज बुलंद की, और समाज में पुरूषों के समान अधिकारों की मांग की, देश में महिला के हितों के लिए महिला आयोग का गठन किया गया, जो महिलाओं के प्रति होनेवाले अन्याय के लिये संघर्ष करती है | २०१२ में प्राप्त आंकडों के अनुसार कामकाजी महिलाओं की भागीदारी कात्र २७% थी | अर्थात कहने का मतलब यह है की इतना सब कुछ होने के बाद भी, आज भी महिलाओं की स्थिती में बहुतकुछ सुधार की आवश्यकता है | अभी तो अधिक तर महिलाओं को यह आभास भी नहीं है की वे शोषण का शिकार हो रही है और स्वयं एक अन्य महिला का शोषण करने में पुरूष समाज को सहयोग कर रही है |

किसी भी समाज की उन्नति जानने के लिए उस समाज की नारी की स्थिती को जानना सबसे अहेम बात है | वैदिक काल से लेकर आजतक हम नारी को लेकर जब विचार करते है तो लगता है की धीरे - धीरे नारी भोगवस्तु बनकर रह गई, जो समाज में भविष्य के लिए घातक है | समाज के सारे प्रतिबन्ध नारी पर है पुरूष के लिए किसी भी प्रकार की मर्यादा तय नही की गई है | पति चाहे कुमार्गी, दुराचारी, अत्याचारी ही क्यों न हों स्त्री को उसे मान्यता देनी होग़ी | समाज ने सभी जिम्मेदारीयाँ स्त्रियों के सिर पर पटक दी है | उपर से परिवार और समाज में अपना सम्मान पाने के लिए आर्थिक रूप से निर्भर होने की सलाह दी जाती है हम जरूर कहते है की नारियों में बदलाव हो चुका है, किंतु सच बात यह है की उच्च शिक्षित परिवारों की महिलाओं की बात अलग है | मजदूर वर्ग में शिक्षा के अभाव में रूढीवादी समाज के कारण आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होते हूए भी अपमानित होती रहती है, आज विशेष बदलाव नहीं हो पाया है | महिलाओं में अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने से मध्य परिवार की महिलाएं भी पुरूषों के समान कार्यों को अंजाम देने लगी है | डॉक्टर, वकील, पोलिस जैसे अनेकोक्षेत्रों में महिलाओं की बहुत मांग है | परन्तु हमारे समाज का ढांचा कुछ अलग है | महिला को कामकाजी होने के बाद भी नए प्रकार के संघर्ष से झूझना पड़ता है, उन्हे अपने कामकाज के साथ घर की जिम्मेदारी भी ठिक ढंगसे उठानी पड़ती है | उसके लिए उन्हें सवेरे जल्दी उठकर अपने परिवार के भोजन से लेकर सभी प्रकार की व्यवस्था करनी पडती है | दफ्तर से संध्या समय लौटने के बाद गृह कार्यों में लगना होता है | घर में सम्मान पाने घरेलू हिंसा से बचने एवं परिजनों के अपमान से बचने के लिए जब एक महिला आत्मनिर्भर होने के लिए घर से बाहर निकलती है, तो उसे समाज और पुरूष सत्तात्मक सोच रखनेवालों से सामना करना पड़ता है, अनेकों टीका टिप्पणीयों, तानाकशी, घुरती निगाहों से सामना

करना पड़ता है | उदंड व्यक्तियों के छेडखानियों से बचने के लिए उपक्रम करने होते है, कभी - कभी तो बलात्कार और पतिरोध का सामना करते वक्त हत्या का शिकार भी होना पड़ता है | अपने कार्य स्थल पर अपने ही बॉस या सहयोगियों से दुर्भावनाओं का शिकार होना पड़ता है | संध्या समय अपने कार्यस्थल से लौटते समय अनेक प्रकार की आशंकाओं अनहोनी घटनाओं का शिकार भी मन में व्याप्त असुरक्षा की भावना, जीवन को कष्ट दायक बनाते है | वेतन के मामले में भी महिलाओं का शिकार होता है जैसे - अंग्रेजी स्कुलों का वेतन | कम्पनियों, कारखानों का वेतन कोई सकारात्मक पहल की उम्मीद नहीं होती, अनेक बार तो वह अनेक दुर्व्यव्यवहार का शिकार हो जाती है | आज भी पुरूष प्रधान समाज की सोच में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को नहीं मिलता साथ ही हमारी लाचार न्याय व्यवस्था के कारण यदि कोई महिला सरेआम किसी अत्याचार का शिकार होती है तो समाज के लोग उसका बचाव करने से भी डरते है | स्त्रियों के सारे अधिकार सुरक्षा के नाम पर छीन लिए गए स्वतन्त्रता नाम मात्र की रह गई | स्त्री के जीवन का दायरा घरकी चारदिवारी तक सीमित रहा |

वर्तमान समाज में नारी की समतुल्यता को लेकर बुलन्द नारे चलते है | किंतु व्यावहारिक रूप से आज भी पाषाण युग की स्त्री की भाँति नारी परतंत्र है | "यत्र नार्थस्तु पूजंते रमन्ते तत्र देवता" कह कर प्राचीन काल में नारी की पूजा में देवता की उपस्थिती समझी जाती थी | लेकीन ऐसी नारी की भावनाओं को दमित करके समाज अब संतोषपाता है | फिर भी सभी काल के साहित्य चाहे सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक किसी भी कोटि का हो या किसी भी विधा का हो उसमें नारी जाति के मानसिक संवेगों, आन्तरिक अनुभूतियों, अतृप्त वासनाओं दिवास्वप्नों और असामान्य व्यवहारों का सम्यक चित्र उपस्थित करता है | उषा महाजन की कहानी पुल की नायिका पुरूष समाज को चेतावनी देती हुई कहती है आपके लिए मैं महज एक साधन हूँ ? सोमेश तक पहुँचने के लिए एक पुल | नारी के बदलते रूप के कारण वह अपने अधिकारों के प्रति सजग होकर निर्णय लेने लगी है | नारी की मानवी रूप में प्रतिष्ठा ही समाज के भविष्य को उज्ज्वल बना सकती हैं | इस सम्बध में मृणाल पाण्डे लिखती हैं ड़ स्त्री के अस्तित्व को, उसके पुरूष से जुड़े सम्बन्धों तक ही सीमित करके न देखा जाये, बल्कि पुरूष की ही तरह उसे भी मानवता का एक भिन्न तथा अनिवार्य और पूरक तत्व माना जाए | स्वतन्त्रता पुरूष के समान स्त्री का भी अधिकार है | पुरूष अपने आप में स्वतन्त्र है, परन्तु स्त्री की स्थिती ऐसे नहीं है | वह स्वतन्त्र होकर कहीं जाती, तो उसे समाज दुश्चरिणी घोषित करता है | चित्रा मुद्रगल की कहानी राणी माँ का चबूतरा की नायिका गुलाबी जीने के लिए बच्चों के पालन के लिए तनतोड़ मेहनत करती स्वावलंबी स्त्री है | रात के समय जब वह काम पर जाती है तो लोग उसे गलत नजर से देखते है | यही हमारे समाज की स्थिती है |

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College Sonpeth Dist. Parbhani

गुलाबी के समान स्वावलंबी होकर जीना स्त्री का अधिकार है, पर स्त्री इससे भी वंचित है | प्रगति की इस दौड़ में जहाँ नारी आगे बढ़ रही है | वहाँ पुरूष समाज को किसी भी चुनौती से डरने वालीभी नहीं है | स्त्री - पुरूष सम्बन्ध में स्त्री, पुरूष की सहकर्मी बनाना चाहती है और अपनी गरिमा से जीवनपथपर आगे बढ़कर गौरव अर्जित करना चाहती है | इसके बारे में श्याम चरण दुबे ने कहा है | " नारी स्वतन्त्र व्यक्तित्व या स्वतन्त्र इकाई के लिए अपना आक्रोश व्यक्त करना चाहती है | इस नारी स्वतन्त्र व्यक्तित्व में डॉ. प्रभा खेतान कहती. " स्त्री न स्वयं गुलाम रहना चाहती है, नही पुरूष को गुलाम बनाना चाहती है | स्त्री चाहती है - मानवीय अधिकार | स्त्री दृष्टि एक मानवीय दृष्टि है जो स्त्री - पुरूष भेद को मिटाकर दोनों में प्रतिष्ठा की समानता लाने की बात करती है |

निष्कर्षत :- कहा जा सकता है कि स्त्री चेतना और मानव अधिकार की जोरदार अभिव्यक्ति से ही समाज में मानव अधिकारों के हनन के प्रति नारी को जागृत किया सकता है |

संदर्भ

१) आशा रानी व्होरा - भारतीय नारी : दशा, दिशा
२) पुष्पावली खेतान - नारी अभिव्यक्ति और विवेक
३) डॉ. प्रभा खेतान - हंस - दिसम्बर १९९६
४) डॉ. मुदिता चन्द्रा - आधुनिक एवं हिन्दी कथा - साहित्य में नारी का बदलता स्वरूप
५) श्यामाचरण दुबे - परम्परा, इतिहास बोध और संस्कृति
६) मृणाल पाण्डे - स्त्री, देह की राजनीति से देश की राजनीति तक :
७) मैत्रेयी पुष्पा - चाक
८) मधुमती - जून २०१७
९) प्रेमीला के. पी. - स्त्री अध्ययन की बुनियाद

❑❑❑

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

Guidelines for Authors

- No manuscript will be considered which has already been published or is being considered by another journal / book.
- Papers should be typed in MS Word 2003/2007.
- Paper size: A4, Font & size: Times New Roman 12, line spacing: 1, Margin of 1 inch on all sides.
- The tables and figures in the text should be centralized.
- References should be cited in MLA parenthetical style. (Name of the author and page numbers in the parenthesis in the text and list of the works cited arranged alphabetically at the end of the paper)
- The paper must be accompanied by a brief CV of the contributor, self declaration certificate, postal address, cell numbers, E-mail ID(s).
- Contributors are advised to check spelling, punctuation, sentence structure, and the mechanical elements of arrangements, spacing, length, and consistency of usage in form and descriptions before submission.
- Final selection for publication will be made only at the recommendation of the Peer Review Panel. The details of the selection of paper will be communicated to the contributors.
- The editors reserve the right to make necessary editing for the sake of conceptual clarity and formatting.

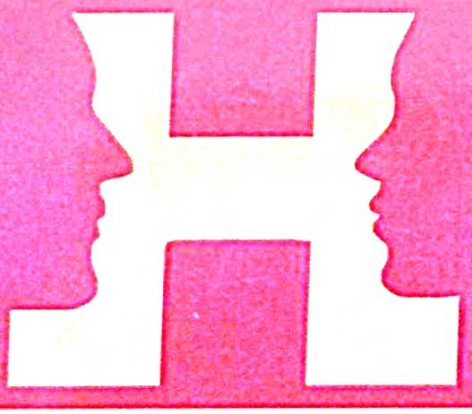

Authorised Distributor

NEW MAN PUBLICATION

www.newmanpublication.com

PARBHANI / AURANGABAD / MUMBAI

Printed and Published by:

Mahatma Gandhi Education Society's

Centre For Humanities and Cultural Studies,

A- 102, Sanghavi Regency, Sahyadrinagar, Kalyan (W).

Email: chcskalyan@gmail.com Web: www.mgsociety.in

Mob. +91 9730721393 +91 8329000732

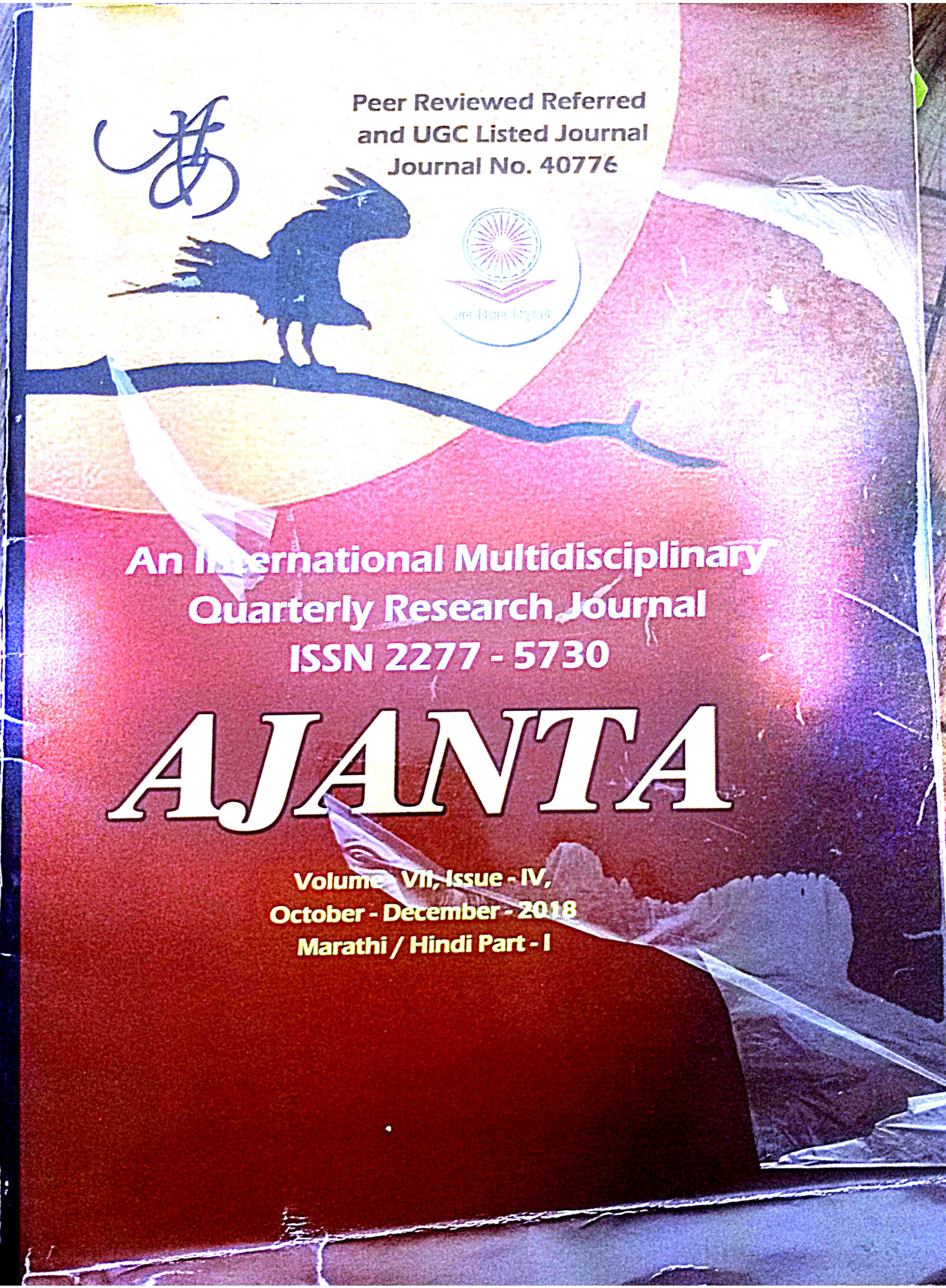

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal
Journal No. 40776

An International Multidisciplinary
Quarterly Research Journal
ISSN 2277 - 5730

AJANTA

Volume - VII, Issue - IV,
October - December - 2018
Marathi / Hindi Part - I

The information and views expressed and the research content published in this journal, the sole responsibility lies entirely with the author(s) and does not reflect the official opinion of the Editorial Board, Advisory Committee and the Editor in Chief of the Journal "AJANTA". Owner, printer & publisher Vinay S. Hatole has printed this journal at Ajanta Computer and Printers, Jaisingpura, University Gate, Aurangabad, also Published the same at Aurangabad.

Printed by

Ajanta Computer, Near University Gate, Jaisingpura, Aurangabad. (M.S.)

Published by :

Ajanta Prakashan, Near University Gate, Jaisingpura, Aurangabad. (M.S.)

Cell No. : 9579260877, 9822620877, Ph.No. : (0240) 2400877

E-mail : ajanta1977@gmail.com, www.ajantaprakashan.com

AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - Impact Factor - 5.5 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF HINDI PART - I

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	श्री गुरू नानक देव जी और भक्ति साहित्य **डॉ. सोनदीप मोंगा**	१-४
२	२० वी सदी के महिला कथा साहित्य में स्त्री विमर्श **प्रा. डॉ. मालती डी. शिंदे (चव्हाण)**	५-११
३	हिन्दी साहित्य मे नारी प्रेम और सौदर्य **सौ. अल्का एन. वानखडे**	१२-१४
४	हिंदी साहित्य में मानवीय सौंदर्य तथा प्रेम **प्रा. डॉ. वडचकर एस. ए.**	१५-१८
५	कवि डॉ. हरिवंशराय बच्चन और उनका हालावाद **प्रा. डॉ. विजया जगन्नाथ पिंजारी- शिंदे**	१९--२५
६	मणि मधुकर के नाटको में सामाजिक संवेदना **सहा. प्राध्यापक डॉ. विजय वाघ**	२६-२९
७	हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता **प्रा. डॉ. कुलकर्णी वनिता बाबुराव**	३०-३४
८	हिंदी दलित आत्मकथा में व्यक्त पीडा एवं संवेदना **प्रा. डॉ. डमरे मोहन मुंजाभाऊ**	३५-४०

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

४. हिंदी साहित्य में मानवीय सौंदर्य तथा प्रेम

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth, Dist. Parbhani

प्रा. डॉ. वडचकर एस. ए.
हिंदी विभाग, कै. रमेश वरपुडकर
महा. सोनपेठ, जि. परभणी.

प्रेम और सौन्दर्य के विषय दुनिया में सबसे अधिक आकर्षक रहे है। जहाँ तक प्रेम के विषय का सवाल है उसकी कोई निश्चित सीमा नहीं होती है। इसे दो इकाइयों के बीच का लगाव या परस्पर आकर्षण के रूप में ही जाना जा सकता है। इकाइयों में दो प्रेमी, व्यक्ति और देश, व्यक्ति और समाज कोई भी हो सकता है। एक किनारे पर चाहने वाला होगा दूसरे पर जिसे चाहते है वह होगा। स्त्री -पुरुष प्रेम इस क्षेत्र का सबसे प्रमुख विषय है। आकर्षण में शरीर की केन्द्रीयता है। यहीं से शुरू होकर आकर्षण चित्तवृत्तीयों में रूपांतरित होता चला गया है। कवियो, कलाकारो, साहित्यकारों ने शरीर वर्णन को इसी लिए काफी महत्व दिया है। खुजराहों की मूर्ति कला को देख कौन कह सकता है कि कलाकार का गौरव शारीरिक संरचना के अंकन से कहीं दूर है। यह मूर्तिकला दर्शकों के भाव का रूपान्तरण है। दूसरा आधार है - भावना की सत्ता से मनुष्य और प्रकृति की रचना हुई। भावना चेतना का रूप है। चेतना अव्यक्त परमात्मा की सत्ता है। यह माया है। यह साधन है, साध्य नही प्रेम और सौंन्दर्य की भावना से सृष्टि का विषय बनता है। तुलसीदास के शब्दों में "जाकीर ही भावना जैसी प्रभु मूरति देखी तिन तैसी।"[१] अब हमें विचार करना होगा कि प्रेम और सौन्दर्य की भावना का मूल कहाँ है। भारतीय संस्कृत साहित्य में कालिदास, जयदेव, विधापति, सूरदास और हिन्दी साहित्य में प्रसाद, पंत, निराला, केदारनाथ अग्रवाल की कविताएँ याद आती है। प्राचीन साहित्य में रम्भा, मेनका, उर्वशी, राधा की रचनाओं में नारी छवियाँ आदर्श है। कालिदास की काव्यरचना में दो प्रकार का प्रसंग मिलता है। एक प्रसंग सौंन्दर्य का - उर्वशी का सौंन्दर्य असाधारण है। कोई भी आँखवाला उसे देखकर रमता है। दृष्टि हरता नहीं, आँखे गढ़ाए रखता है। उर्वशी की सखियाँ तो उसे रात-दिन देखती है, पर क्या उनकी आँखे तृप्त होती है। दुसरा प्रसंग राधा कृष्ण के प्रेम में तल्लीन है, यह तल्लीनता दिनोंदिन के संम्पर्क के बनी है। राधा एकान्त में भी स्मृतियों में डूबी रहती है। सखिया पूछती है "अपने प्रेम का परिचय तो दो जिसने तुम्हे भाव विव्हल बना दिया है।"[२] तब राधा कहती है "परिचय क्या दूँ, विश्लेषण करने पर मूल गायब होने का खतरा है तथा विश्लेषण न करने पर समझना कठिन है।"[३] तब लगता है की दृश्य रूपवान होता है, और दृष्टा प्रेमवान। मानव प्रेम में सौंन्दर्य की भावना अनादी काल से मानव के न्हदय की धडकन और रक्त की लालिमा जीवित है। कवि इस मधुर अनुभव को अभिव्यक्त करके संतोष प्राप्त करता है। दुनिया का आधे से अधिक हिस्सा सौंन्दर्य का आधार बनाकर ही लिखा गया है। सौंन्दर्य को कवियों ने अपने - अपने मतानुसार वस्तुगत एवं व्यक्तिगत रूप में व्यक्त करने की कोशिश की है। आदिकालीन साहित्य में सौंन्दर्य अद्वितीय, अनुपम होने के अनेको उदाहरण मिलते है। आदिकाल हिन्दी साहित्य का प्रथम चरण है। इस काल में धार्मिक तथा लौकिक साहित्य में सौन्दर्य ओर प्रेम अधिक मात्रा में मिलता है। आदिकालीन कवियोंने नारियों के रंग - रूपों की चर्चा को अपने काव्य का विषय ही बनवाया है। पृथ्वीराजाओं अत्यंत उच्च कोटी का इसका उदाहरण है। इसमें संयोगिता के सौंन्दर्य को सुंदरता से चित्रित किया है। मानो उसके शरीर में समुद्र से निकले चौदह रत्नों को गिना है। साथ ही विद्यापति ने सौंन्दर्य बोध को

परम्परा को 'गीत गोविंद ' के द्वारा आगे बढ़ाने की कोशिश की है। कविता में शब्द होते है, जो अर्थ पैदा कर मूल को पाठकों तक पहुंचाते है। शब्दों का काम है कि वे मूल का स्मृति चित्र बनाएँ, बिम्ब बनाएँ और अर्थ सम्प्रेषण करें। कविता में वर्णन का विशेष महत्व है। आज का मनुष्य इतना अहं केंन्द्रित है, उसकी गिनती करना मुश्किल कार्य है। उसमें विचारों को भरमार है, प्रेम और सौंन्दर्य का जिम्मा विज्ञापन और उपभोक्ता विभागों के पास है। कालिदास की कविताओं में शकुन्तला, दुष्यंत का प्रेम संवाद रूपाकर्षण से शुरू होता है। प्रकृति प्रेम सिध्दि में गवाह होती है। वह सजीव लगने लगती है। तारों, नदी-पर्वतों, हरी-भरी धरती के पुष्प-गुच्छों में प्रेम की लहर फैली है। कवि ऋतुओं का वर्णन करता है तो उसमें गहरा सम्बन्ध भाव रहता है। वसंत ऋतु का चित्रण-

" सहकार कुसुम केसर निकर भरा मोद मूर्च्छित दिगन्ते।
मधुर मधु विधुर मधु पे मधौ भक्त कस्य नोत्कष्ठा॥ " [४]

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

पवन के झोके लताओं का लहराना, पेडों का फलों से लद-लद होकर झुकना। यह केवल मानवीकरण नही है, यह मानवीकरण मनुष्य तथा हिन्दी साहित्य की परम्परा में यह काफी दिन से चलता आ रहा है। किंतु आधुनिक काल में छायावादी कवियों ने इसकी रक्षा की है। पन्त को प्रकृतिके कवि कहा गया है। अन्य छायावादी कवियों की तुलना में पंत का काव्य व्यक्तिगत्व विकार मूल्यबोध के रूप में गाना जाता है। छायावादी सौंन्दर्य चेतना का मुख्य आधार प्रकृति और नारी रहा है। प्रसाद की कविता में प्रेम और सौंन्दर्य सृष्टि के बीच है। उसमें सहज ऐन्द्रिक सम्बेदनाएँ है। नाटकों के पात्रों में प्रेम स्त्री पुरूष की सरहदों को छूलेती है। निराला की कविता में अनेक रूपों की सत्ता के चित्र मिलते है। गद्य में प्रेमचंद के पात्र में प्रेम संबन्धों के लिए जीवन की सक्रिय स्थितीयाँ जिम्मेदार होती हैं। अब तक प्रेम और सौंन्दर्य के वर्णन की शाखाएँ इतनी हो गयी है, स्वकीया, परकीया, शरीरी, अशरीरी, दैहिक - आत्मिक सम्बंन्धों के इतने रूपों में रचनाकार इसका निर्वाह करते हैं कि वास्तविकता को स्थिर करना कठिण लगने लगता है। ज्यादातर रचनाकार इस क्षेत्र में युवा शरीर और युवा मनकी झ ॉकियाँ प्रस्तुत करते है। यौवन की स्थितियों में शरीर का आकर्षण और वासनात्मक ललक प्रमुख रहती है। यह आकर्षण कभी कभार घातक होता है। केदारनाथजी की कविता इसका उदाहरण है।

" एक कली ऐसी होती है / जो अन्तस को छुलेती है।

स्वयं आप ही, और गंध से भर देती है। स्वयं आप ही / चाहे कोई रूप न माँगे, गन्ध न माँगे / तुम ऐसी ही एक कली हो।" [५]

यह कविता युवावस्था की है। रूप और गन्ध कली के गुण है। कली है तो गंध है अन्तस को छुने की बात है अन्यथा कहाँ से आयेंगे ?

" हे मेरी तुम / हम दोनों अब भोग रहे है / दीनदेह को / प्यार -प्यार से बाँधे / ढले - ढले / दिल से ढकेल ते / दिन को ठेला और रात को, काट रहे है, भीतर लौ साधे।" [६]

केदारनाथजी की इस कविता में युवावस्था में उपजा शरीर प्रेम भावना की शक्ति बना है। वह शरीर के कमजोर होने पर भी आपस में बाँधता है। इनके कविता में जीवन सहचरण की छाप है। जीवन कोई अमूर्त और निर्गुण चीज तो है नहीं। शरीर सौंन्दर्य और उसके प्रति लगाव अर्थात प्रेम आपके भीतर है। प्रेम सार्वभौमिक, सर्वकालिक, सनातन और नित्यनवीन है। जन्म से लेकर मृत्यु तक मानव प्रेम को तलाशता रहता है। प्रेम के अभाव में मानव जीवन नीरस हो जाता है। बाल्यकाल

से प्रेम माता - पिता या नये - नये खिलौनों के लिए उमडता है | किशोर अवस्था में युवक - युवतियों में पारस्परिक आकर्षण को लेकर प्रकट होता है | जो दाम्पत्य के सुत्र में बंध जानेपर आजीवन विश्वास के सुदृढ बंधन में परिवर्तित हो जाता है | प्रेम सृष्टिका चालक भी है और मुक्ति का मंत्र भी है | सचमुच प्रेम ही जीवन है | कबीरदास ने तो प्रेम से रहित हृदय को शमशान कह दिया | " जा घट प्रेम न संचरे, सो घट जान मसान |"[७] प्रेम न् शब्द ही भाववाचक है | प्रेम न् शब्द की व्युत्पत्ती प्री धातु से मनिन प्रत्यय जोडने पर मानी जाती है | प्री का अर्थ है प्रसन्न करना, आनन्द लेना या आनंन्दित होना | प्रेम याने प्रीति देनेवाला | प्रेम यह शब्द अत्यंत व्यापक है, इसी व्यापकता को आधार बनाकर दार्शनिकोंने अलग - अलग रूपसे परिभाषित करने का प्रयास किया है | वाचस्पत्य कोश में " प्रेम का मजा चखने के लिए ही आत्मा एक बार फिर अस्थि पिंजर में बन्द होने को राजी हुआ है | बाह्य सौन्दर्य किस काम का जबकि प्रेम जो आत्मा का भूषण है, हृदय में न हो | प्रेम जीवन का प्राण है | जिसमें प्रेम नही, वह केवल सांस से घिरी हुई हड्डीयों का ढेर है |"[८] तो ही गेल कहता है प्रेम व्यापार के द्वारा ही अभेद की स्थिती प्राप्त होती है | प्लेटो का मानना है कि प्रेमनुभव से रहित व्यक्ति सदा अंधकार में भटकता है | स्वामी रामानंद तीर्थ ने सच्चा प्रेम सुर्य की तरह आत्मा को प्रकाश देनेवाला माना है | प्रेम का वास्तविक अर्थ सौन्दर्य का दर्शन है | पाश्चात्य विद्वानों ने दाम्पत्य जीवन में प्रेम की संभावनाओं पर बल देकर अध्यात्म की अनिवार्यता पर बल दिया है | "यौन भावना या कामवासना मूलत: व्यक्ति विशेष का आग्रह नहीं करती परन्तु प्रेम का सम्बन्ध निश्चित रूप से व्यक्ति विशेष से ही होता है और यह मैं और तुम के बीच निश्चित भावत्मक सम्बंन्ध है |"[९] यहां प्रेमी - प्रिय - प्रेम की त्रिवेणी का संगम होकर तीनों एकाकार हो जाते है | कबीरदास और कृष्ण भक्त कवियों का प्रेम इसी कोटी में आता है |

कवि रविन्द्रनाथ टैगोर नं प्रेम की कल्पना कुछ इस प्रकार की है "प्रेम केवल एक भावना मात्र नहीं है, वह परमार्थ है, परम सत्य है, सृष्टी ही आनन्द प्रेरणा है, ब्रम्हा की शुभ्र ज्योति है, इसी के द्वारा हम ब्रम्हा- विहार कर सकते हैं | केवल प्रेम रहित व्यक्ति प्रेमोपहार पर भी हानि - लाभ या उपयोगिता के रूप में विचार करते हैं किन्तु यह प्रेम नही है |"[१०] दुसरे शब्दों में अगर कहा जाय तो प्रेम केवल बाह्य रूपाकृति को देखकर रीझना ही है तो वह कोरी वासना है | प्रेम एक अत्यन्त पवित्र भाव है जो शनै: शनै: आत्मिक तत्व पा लेता है |

प्रेम अत्यन्त जटिल मनोवेग है, संम्पूर्ण विश्व को इसने एक सुत्र में बांध रखा है | प्रेम के बीना जीवन की कल्पना तक नही की जा सकती | सृष्टी का प्रत्येक प्राणी प्रेम के सरस रूप का अनुभव करता है | किन्तु इस अनुभूति को व्यक्त करना कठिन है | प्रेम रूपी आकर्षक वस्तुओंसे नही हो सकता अपितु विशिष्ट वस्तु या व्यक्ति ही प्रेम का पात्र बनता है जबकि काम - भाव किसी भी वस्तु के प्रति जागृत हो सकता है और यह भाव स्वार्थ - तत्व की प्रधानता लिये है | पवित्र धर्म ग्रंथ गीता के अनुसार, "काम का धर्म से अविरोध, काम की प्रेम रूप में परिणति ही है |"[११] प्रेम यह मूल्यनिष्ठ है, कामवासना में कायिक आकर्षण का ही महत्व है | प्रेम एक अत्यंत पवित्र भाव है जिसमें स्वार्थ - भावना के लिए तनिक भी स्थान नही है | इसी पवित्रता में प्रेम के गुणों का विवेचन करना बड़ा मुश्किल कार्य होते हुए भी तुलसीदासजी ने आशा, विश्वास और भरोसा को प्रेम के गुण माना है | वे कहते है ;

"एक भरोसो एक बल, एक आस बिसवास |
एक राम घनश्याम हित, चातक तुलसीदास |"

तुलसीदासजीने चातक व मेघ के प्रेम के बहाने, राम के प्रति अपने प्रेम का जो वर्णन दोहावली में किया है, उससे हमें प्रेम के सब गुणों का गुच्छ मिलता है। परम उदात्त और निर्मल प्रेम की ऐसी कल्पना अन्यत्र दुर्लभ है। पपीहा आदर्श प्रेमी है और बादल आदर्श प्रेम पात्र। बादल पपीहे का एक मात्र भरोसा बल, आशा तथा विश्वास है। बादल के बरसने में चाहे उम्र बीत जाए, परन्तु प्रेमी चातक की आशा बनी रहती है। बादल का नाम रटते रटते चातक ही जीभ शुष्क हो जाती है। परन्तु उसके आदर्श प्रेम का तेज उसके शरीर को दीप्त रखता है। इस प्रेम में अनन्यता, निष्काम भावना, पवित्रता तथा भोलापन है। प्रेम तथा सौन्दर्य निरूपम में हिन्दी काव्य में जायसी का स्थान अग्रणी है। कबीर और जायसी एक दूसरे के पुरक है। सूफी कवियों के काव्य का मुख्य रस श्रृंगार है और मुख्य विषय प्रेम। पद्मावत में वर्णित प्रेम में संयोग वियोग दोनों पक्षों का अत्यंन्त व्यापक वर्णन मिलता है। पद्मावती का नख शिख वर्णन इनकी प्रतिभा का परिचायक है। कृष्ण भक्ति में सूरदास का काव्य प्रेम तथा सौन्दर्य भावना की निधि समान है। मानव ह्दय में प्रेम की जितनी भी प्रवृत्तीयाँ विद्यमान है, उन सबका वर्णन सूरकाव्य में हुआ है। रीतिकाल का प्रेम मुख्यत: ऐन्द्रिय है। इसमें प्रेम के मुख्य आलम्बन किशोर- किशोरी है। इस काल के कवियोंकी दृष्टि नायिका के सौन्दर्य पर अधिक पड़ी है। नायिकाओं के अंग - प्रत्यंग, रूप रंग, कान्ति सौकुमार्य, गप्न, आयु, चेष्टाएं, वेशभूषा, आभूषण आदि का सुक्ष्म मादक चित्र हुआ है। आधुनिक काल में छायावादी कवियों के काव्य में भाव सौंदर्य और कला सौष्ठव आपने चरमोत्कर्ष पर है।

इस प्रकार हम देखते है कि प्रत्येक युग में काव्य में प्रेम व सौन्दर्य की अभिव्यक्ति हुई है।

संदर्भ

१) तुलसीदास -
२) विद्यापति की पदावली -
३) विद्यापति की पदावली -
४) कालिदास - शकुंतला - दुष्यंत प्रेम प्रसंग -
५) केदारनाथ अग्रवाल -
६) केदारनाथ अग्रवाल -
७) कबीरदास -
८) वाचस्पत्य कोश -
९) पं. रामचन्द्र शुक्ल - चिद्रविलास -
१०) रविन्द्रनाथ टैगोर - साधना - १९४७
११) भग्वत गीता
१२) तुलसीदास

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

CONTACT FOR SUBSCRIPTION

Ajanta Prakashan
Jaisingpura, Near University Gate,
Aurangabad. (M.S.) 431 004
Mob. No. 9579260877, 9822620877
Tel. No.: (0240) 2400877,
ajanta1977@gmail.com, www.ajantaprakashan.com